शनि ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित शनि ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय शनिवार के दिन संध्याकाल से आरम्भ करना चाहिये। शनि ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, पश्चिम दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो तेल का दीपक जलाकर प्रतिदिन या शनिवार और बुधवार को अवश्य करना चाहिये। शनि ग्रह के मंत्र जप के पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए शनि ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी शमी (खिजरे की लकड़ी) या आम की समिधा से करना चाहिये।

वैदिक मंत्र

ऊँ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः।।

पौराणिक मंत्र

ऊँ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।

छायामार्तण्डसंभूतं नमामी शनैश्चरम्।।

ध्यान मंत्र

इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदोगृध्रवाहनः।

बाणबाणासनधरः कर्तव्योऽर्कसुतस्तथा।।

शनि ग्रह के लिए गायत्री मंत्र

ऊँ शनैश्चराय विद्‌महे

छायापुत्राय धीमहि।

तन्नोः मंदः प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

ऊँ क्लीं क्लीं शनये नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

श्री घनश्याम शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं एक या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से संध्याकाल के समय करना चाहिये।